जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

प्रेषक :डॉ. शेखर सिंह बघेल
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी

क्रमांक 175
दिनांक 01.11.2022

माटी में सूक्ष्मजीवों के संसार बढ़ाने से धरती होगी स्वस्थ – डॉ. कौतू
कृषि वैज्ञानिक 21 दिनों तक सीखेंगे नेचुरल फार्मिंग के गुर
जनेकृविवि में प्राकृतिक खेती–चुनौतियाँ एवं अवसर विषय पर राष्ट्रीय प्रशिक्षण शुरू

जबलपुर 01 नवम्बर। खराब फसलों और सामाजिक दबाव ने भारत के अन्नदाताओं को त्रस्त कर दिया है। महंगे रासायनिक खाद और बीज खरीदने के लिये किसान कर्ज लेने पर मजबूर हो रहा है। 60 के दशक में हरित क्रांति ने रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और उच्च उपज वाले संकर बीजों के बड़े पैमाने पर उपयोग को प्रेरित किया, जिसने पानी को जहर बना दिया और मिट्टी के आवश्यक पोषक तत्वों को लूट लिया और पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है। वर्तमान समय एक और कृषि क्रांति का आव्हान करता है जो किसानों की मदद कर सकती है, मिट्टी की गुणवत्ता को बनाएं रख सकती है और पारिस्थितिकी तंत्र को बचा सकती है। यह बात संचालक अनुसंधान सेवायें डॉ. जी. के. कौतू ने मुख्यअतिथि की आसंदी से कही। मौका था जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर के कुलपति डॉ. प्रदीप कुमार बिसेन की सद्प्रेरणा से कृषि महाविद्यालय जबलपुर के मृदा विज्ञान विभाग के अंतर्गत संचालित एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा वित्त पोषित **''राष्ट्रीय सेंटर ऑफ एडवांस्ड फेकल्टी ट्रेनिंग''** के अंतर्गत प्राकृतिक खेती– चुनौतियाँ एवं अवसर विषय पर 21 दिवसीय प्रशिक्षण के प्रथम दिवस उद्घाटन सत्र का। डॉ. कौतू ने कहा कि 15 जिले ऐसे है कि जहां के किसान कम कम से कम फर्टिलाइजर का उपयोग करते हैं, ऐसे जिलों के किसानों को सरकार चिन्हित कर रही है। जो हमारी पुरानी पद्धति है, उसे दोबारा से जीवित करना है। माटी में सूक्ष्मजीवों के संसार बढ़ाने से धरती स्वस्थ होगी। उन्होंने सभी प्रशिक्षकों को बधाई देते हुये कहा कि 21 दिनों तक चलने वाली इस महत्वपूर्ण ट्रेनिंग से आप लोग नेचुरल फार्मिग, प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिये किसानों को प्रेरित करेंगे। उन्होंने जीआई टैंग, शोध के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यशाली सहित अन्य को बहुत ही सरलता और सहजता से समझाया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र के विशिष्ट अतिथि कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. पी. बी. शर्मा ने कहा कि नेचुरल फार्मिग पिछले 3 साल में विज्ञान के क्षेत्र में सबसे ज्यादा बोले जाने वाला शब्द हो गया है। सभी को प्राकृतिक खेती की ओर अग्रसर होकर कार्य करने की परम आवश्यकता हो गई। सरकार भी इस ओर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर, किसानों में जागरूकता लाने के लिये कोई कसर नहीं छोड़ रही है। उन्होंने देश के अलग–अलग संस्थानों से आये वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों को भी इस महत्वपूर्ण प्रशिक्षण में शामिल होंने पर शुभकामनायें दी।

केफ्ट के संचालक एवं मृदा विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एन.जी. मित्रा ने स्वागत उद्बोधन में कहा कि संपूर्ण राष्ट्र में आई.सी.ए.आर. द्वारा सिर्फ और सिर्फ जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय को सेंटर ऑफ एडवांस्ड फेकल्टी ट्रेनिंग हेतु चयनित किया है। 3 दशक के अधिक समय से मृदा विज्ञान विभाग द्वारा यह प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है, जिसे कृषि शिक्षा–शोध विस्तार के कृषि वैज्ञानिकों का अपने ज्ञान को समयानुरूप बदलाव व जानकारी प्रदान की जाती है। यह 21 दिवसीय प्रशिक्षण में नेचुरल फार्मिग, प्राकृतिक खेती पर विशेषज्ञों द्वारा बहुत ही महत्वपूर्ण बिंदुओं पर अपने विचार साझा किये जाऐंगे जो आप सभी के लिये कारगर साबित होगी। 21 दिवसीय प्रशिक्षण में 5 राज्यों पंजाब, गुजरात, उत्तर प्रदेश, आंध्रप्रदेश एवं मध्यप्रदेश से आये प्रशिक्षणार्थी भाग ले रहे है। कार्यक्रम का संचालन 21 दिवसीय प्रशिक्षण के सह समन्वयक डॉ. शेखर सिंह बघेल द्वारा किया गया एवं आभार प्रदर्शन प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. पी.एस. कुल्हारे प्रमुख वैज्ञानिक द्वारा किया गया। उद्घाटन में डॉ. पी.एस. कुल्हारे, प्रमुख वैज्ञानिक, डॉ. एच.के.राय, प्रमुख वैज्ञानिक, डॉ. शेखर सिंह बघेल, सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी, डॉ. बी.एस. द्विवेदी, वैज्ञानिक, डॉ. अमित उपाध्याय, डॉ. जी.एस. टैगोर, डॉ. राकेश साहू, डॉ. अभिषेक शर्मा, डॉ. फूलचंद अमूले, श्री बबलू यदुवंशी, श्री मधुकर परिपगार, श्रीमती संगीता ठाकुर, श्रीमती दीपा यादव, श्री आशीष यादव, श्री विजय कुमार झारिया, श्रीमति संगीता ठाकुर, श्रीमति दीपा यादव, श्री राजकुमार काछी एवं श्री अनुराग दुबे सहित समस्त विभाग के कर्मचारी एवं मृदा विज्ञान विभाग के छात्र–छात्राओं की उपस्थिति रही। प्रशिक्षण के दौरान सभी प्रशिक्षणार्थियों को खाद्य विज्ञान विभाग में संचालित हो रही विभिन्न गतिविधियों की विस्तार से जानकारी विभागाध्यक्ष डॉ. एस.एस. शुक्ला द्वारा दी गई। इस अवसर पर डॉ. अर्चना पांडे, डॉ. प्रतिभा परिहार, डॉ. राजेन्द्र ठाकुर सहित अन्य वैज्ञानिक एवं विभाग के कर्मचारी उपस्थित रहे।

जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग